

डॉ. फ्रेड पुटनम, नीतिवचन, व्याख्यान 2

© 2024 फ्रेड पुटनम और टेड हिल्लेब्रांट

हमारी दूसरी बातचीत के लिए आपका फिर से स्वागत है। मैं अभी इस बारे में थोड़ी बात करने जा रहा हूँ कि जब हम एक कहावत पढ़ते हैं तो हम वास्तव में क्या पढ़ रहे होते हैं, यानी एक कहावत क्या है, और फिर किताब के पहले कुछ छंदों को देखकर पूछेंगे कि यह किताब क्यों लिखी गई थी। और क्योंकि इससे हमें फिर से मदद मिलती है, जैसा कि हमने यह जानने में देखा कि इसे किसने लिखा है, हमें यह समझने में मदद मिलती है कि हमें इसमें जो मिलता है उसे हमें कैसे पढ़ना चाहिए।

तो, प्रश्न यह है कि कहावत क्या है? खैर, यह एक ऐसा प्रश्न है जिसका कोई सर्वसम्मत उत्तर नहीं है। यदि आप शब्दकोश पढ़ते हैं, तो आपको लोक ज्ञान की एक संक्षिप्त, सारगर्भित कहावत जैसी कोई चीज़ मिलेगी जो पारंपरिक सलाह के साथ चलती है, या ऐसा ही कुछ। और वास्तव में, यदि आप कहावत को गूगल करें और इंटरनेट पर देखें, तो आपको कई विद्वानों द्वारा कई परिभाषाएँ मिलेंगी।

लेकिन ऐसा प्रतीत होता है कि उन सभी के पास कुछ निश्चित, यदि कीवर्ड नहीं तो कम से कम मुख्य विचार हैं। कहावतें छोटी हैं। कुछ तो ऐसा है जो इन्हें यादगार बनाता है यानी याद रखना आसान है।

वे काफी सरल हैं, यानी समझने में आसान हैं। इसका मतलब यह नहीं है कि उनके लिए यह समझना आसान है कि उनके साथ क्या करना है, बल्कि इसका मतलब यह है कि उन्हें जानना आसान है, हम जानते हैं कि वे किस बारे में बात कर रहे हैं। इनका व्यापक रूप से उपयोग किया जाता है।

अर्थात् कहावत कोई ऐसी चीज़ नहीं है जिसका प्रयोग केवल एक ही व्यक्ति करता हो। यह उससे भी अधिक बन जाता है जिसे हम एक सूक्ति कहते हैं, शायद, या यहां तक कि सिर्फ एक कहावत। और वे आमतौर पर छवि-आधारित भी होते हैं या इसे किसी प्रकार की तस्वीर या छवि के आसपास बनाया जाता है।

कई आधुनिक परिभाषाओं में, हमें ऐसे शब्द मिलते हैं जैसे वे सामाजिक रूप से स्वीकृत हैं, और अनुभवात्मक रूप से आधारित हैं, और यहां तक कि आधुनिक मनोवैज्ञानिक शोध भी है जो इस बात पर गौर करता है कि किसी कहावत को सुनना या किसी कहावत को सुनना वास्तव में मस्तिष्क के कुछ हिस्सों को कैसे प्रभावित करता है, ताकि कहावत की संरचना, कहावत की प्रकृति, एक ही समय में मस्तिष्क के दोनों हिस्सों को प्रभावित करती है, जो संचार करने का एक बहुत ही असामान्य तरीका है। आमतौर पर, हम किसी के दाएँ पक्ष या उसके बाएँ पक्ष से बात करते हैं, या हम अपने दाएँ पक्ष या बाएँ पक्ष का उपयोग करते हैं, स्वतंत्र रूप से, लेकिन कहावतें एक ही समय में दोनों के लिए लागू होती हैं। अब, आप देखते हैं, समस्या का एक हिस्सा यह है कि हम एक कहावत को इस आधार पर परिभाषित कर सकते हैं कि यह कैसी दिखती है या

कैसी लगती है, या हम इसे सुनने वाले व्यक्ति पर इसके प्रभाव, या इसके उपयोग के संदर्भ में परिभाषित कर सकते हैं। इसे रखें।

और इसलिए, कुछ लोग बस यह कहते हैं, जब मैं इसे देखता हूं तो मुझे पता चल जाता है, जो वास्तव में बहुत उचित नहीं लगता है। लेकिन दुर्भाग्य से, हम इसी स्थिति पर पहुँचे हैं, ऐसा इसलिए है क्योंकि वास्तव में कोई अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सहमत परिभाषा नहीं है। हालाँकि, फिर से, यदि आप शब्दकोशों को देखें, तो तीन या चार शब्दकोश, वे सभी मूल रूप से एक ही बात कहेंगे।

लेकिन वे परिभाषाएँ किसी पारामियोलॉजिस्ट द्वारा नहीं लिखी गई हैं, अर्थात् वे लोग जो कहावतों का पेशेवर रूप से अध्ययन करते हैं। बाइबिल की कहावत क्या है? खैर, उनके कुछ समान पहलू हैं। वे छोटे हैं।

वे अंग्रेजी में उस तरह नहीं दिखते। लेकिन मैंने एक बार एक दिलचस्प प्रयोग किया था। मैंने अध्याय 10 से 16 तक प्रत्येक कहावत के सभी शब्दों को गिना, और फिर हिब्रू के सभी शब्दों को, और फिर सभी शब्दों को, मैंने अंग्रेजी अनुवाद का बहुत शाब्दिक अनुवाद किया।

मैंने सारे शब्द गिन लिये। हिब्रू में प्रति पद्य शब्दों की औसत संख्या 7.6 है। अंग्रेजी में शब्दों की औसत संख्या 18 से अधिक है। तो, आप सही हैं, वे अंग्रेजी कहावतों की तरह नहीं लगते हैं, जो इस तरह की चीजें हैं, समय में एक सिलाई नौ बचाती है, पैसे की बात करती है, या ऐसा कुछ।

और अंग्रेजी की 10 शब्दों की एक कहावत भी हमें बहुत लंबी लगेगी। लेकिन हिब्रू में कहावतें बहुत संक्षिप्त हैं, क्योंकि हिब्रू सिर्फ अनुमति देता है, हिब्रू उसी प्रकार के संपीड़न की अनुमति देता है जो अंग्रेजी में होता है, लेकिन जब आप हिब्रू में उस बहुत संपीड़ित रूप का अंग्रेजी में अनुवाद करते हैं, तो इसका विस्तार करना पड़ता है। इसे उसी सख्त प्रारूप में अनुवाद करने का कोई तरीका नहीं है, या कम से कम उस तरीके से नहीं जिसका हममें से किसी के लिए कोई मतलब हो।

लेकिन बाइबल में, शायद बड़ा अंतर यह है कि बाइबल में कई नीतिवचन एक ही बात को दो अलग-अलग तरीकों से कहते प्रतीत होते हैं। एक विशेषता जिसे हम समानता कहते हैं, और मैं इसके बारे में इस व्याख्यान में थोड़ी देर बाद बात करूंगा। और यह बिल्कुल भी अंग्रेजी जैसा नहीं लगता।

अधिकांश अंग्रेजी कहावतों के दो भाग हो सकते हैं, जैसे आउट ऑफ़ साइट, आउट ऑफ़ माइंड। यह बहुत प्यारा है। लेकिन वे नहीं हैं, यह एक कथन है।

यह दो अलग-अलग वाक्य नहीं हैं जिन्हें एक साथ रखा गया है। लेकिन बाइबिल की बहुत सी कहावतें इसी प्रकार हैं। मैं इसका उल्लेख इसलिए कर रहा हूँ क्योंकि अक्सर जब लोग नीतिवचन की पुस्तक से उद्धरण देते हैं, तो वे केवल श्लोक का आधा हिस्सा ही उद्धृत करते हैं।

और यह कुछ-कुछ वैसा ही है जैसे पहले भाग को उद्धृत करना, या किसी उपन्यास के पहले भाग को पढ़ना, और दूसरे भाग को अछूता छोड़ देना, या पहले भाग को पढ़े बिना दूसरे भाग को पढ़ना। उन्हें इस तरह समझा नहीं जाना चाहिए था। यह कुछ कथनों से बनी एक एकल कहावत है।

दोनों कथन एक साथ कार्य करते हैं, और ऐसा नहीं है कि वे साथ-साथ हैं। वे वास्तव में एक साथ बुने हुए हैं, और उन्हें एक दूसरे के प्रकाश में पढ़ा जाना चाहिए क्योंकि एक साथ वे कुछ ऐसा कहते हैं जिसे उनमें से कोई भी दूसरे से स्वतंत्र रूप से नहीं कह सकता है। इसलिए, हम उन्हें पहचानते हैं क्योंकि हम उन्हें देखते हैं, या आमतौर पर हमारी संस्कृति में, हम उन्हें सुनते हैं।

तो, कोई कहता है, समय पर एक सिलाई नौ बचाती है। और भले ही हम अलग खड़े हों, मैं एक खेत में बड़ा हुआ हूँ, इसलिए मैं इस उदाहरण का उपयोग कर सकता हूँ, मैंने इसे देखा। यहां तक कि अगर हम पीछे के चरागाह में खड़े हैं, और एक बाड़ पोस्ट है जो जमीन पर सड़ गई है, और हम इसे देख रहे हैं, कोई कहता है, ठीक है, समय में एक सिलाई नौ बचाती है, क्योंकि बहस है, क्या अब हम इसे ठीक करने के लिए समय लेंगे, या क्या हम बस इसे सहारा दे सकते हैं और उम्मीद कर सकते हैं कि यह सर्दियों तक ठीक हो जाएगा? खैर, कोई भी बाड़ पोस्ट को वापस जोड़ने के बारे में बात नहीं कर रहा है।

नहीं, हम सभी जानते हैं कि वे कह रहे हैं, क्या ऐसा है कि आप किसी चीज़ को अभी ठीक कर दें, इससे पहले कि वह बहुत अधिक खराब हो जाए, क्योंकि यदि बाड़ का खंभा गिर जाता है, तो हो सकता है कि गायें मकई में घुस जाएँगी, या हो सकता है कि घोड़े उसमें समा जाएँ। भाग जाओ, नहीं तो सचमुच कुछ और बुरा हो जाएगा। तो, हम कहावत सुनते हैं, हम इसे पहचानते हैं, और फिर हम इसे लागू करते हैं। और हम यह कैसे करते हैं यह वास्तव में एक रहस्य है।

हम वास्तव में नहीं जानते कि हम उन्हें कैसे पहचानते हैं। और इसीलिए हम कहते हैं कि परिभाषा एक तरह की है, मैं इसे तब जानता हूँ जब मैं इसे देखता हूँ, किसी सख्त परिभाषा के साथ आने के बजाय। उनमें से बहुत से लोग इसे पसंद करते हैं, समय पर एक सिलाई से नौ बचते हैं।

मेरा मतलब है, यह बहुत काव्यात्मक है, है ना? हमारे पास सिलाई का समय बचता है, और यदि आप वहां की आवाज़ों पर ध्यान देते हैं, तो यह वास्तव में एसटीटीएस हो जाता है। क्या वह इतना प्यारा नहीं है? एक सिलाई, एसटी, समय में, टी, एस-9 को बचाता है। तो, हमारे पास ध्वनि व्यंजन क्रम में थोड़ा उलटफेर है।

हमारे यहां भी समय और नौ का तुक है। और यदि आप मीटर को सुनते हैं, तो समय में एक सिलाई से नौ की बचत होती है। यह बहुत छंदबद्ध है, यह आयांभिक है।

तो, यह एक तरह से, ये सभी चीज़ें, साथ ही चित्र, हमारे लिए याद रखना आसान बनाते हैं। और साथ ही, किसी तरह हमारे लिए यह समझना आसान बना दें कि हम बाड़ पोस्ट सिलने के बारे में

बात नहीं कर रहे हैं, और कोई भी यह नहीं सोचता कि वह व्यक्ति मूर्ख है। हम सभी समझते हैं कि वे हमें सलाह दे रहे हैं क्योंकि कहावतें यही हैं।

वे वास्तव में एक तरह के परामर्शदाता या सलाहकार हैं। कोई हमें सलाह दे रहा है कि इसे अभी ठीक कर लें, इससे पहले कि चीजें और भी बदतर हो जाएं। अब, वे हमेशा इतने काव्यात्मक नहीं होते हैं, इसलिए हमारे पास अंग्रेजी में कहावतें हैं जैसे अनुपस्थिति दिल को बड़ा कर देती है।

खैर, वहाँ लय है, अनुपस्थिति दिल को और अधिक स्नेहपूर्ण बना देती है। लेकिन कोई तुक नहीं है, कोई अच्छा व्यंजन चयन नहीं हो रहा है। या प्यार अंधा होता है, यह बहुत ही नीरस बात है।

या पैसे की बातचीत, या ऐसा ही कुछ। लेकिन कुल मिलाकर, कहावतों में कुछ ऐसा है जो यादगार और पहचानने योग्य है। और हम यह भी पाते हैं कि जब हम अपने समाज में उनका उपयोग करते हैं, जो, वैसे, बहुत अधिक नहीं होता है, क्योंकि जो लोग कहावतों का उपयोग करते हैं उन्हें आम तौर पर बेवकूफ़ और पुराने जमाने का माना जाता है।

लेकिन दुनिया में बहुत सारे समाज हैं, जैसा कि मैंने अपने पहले व्याख्यान में बताया था, जहां कहावतें बेहद महत्वपूर्ण हैं। और, वास्तव में, ये जीवन का सामान्य प्रवाह हैं। इसी तरह बातचीत भी चलती है।

लेकिन जब हम उनका उपयोग करने के तरीके के बारे में सोचते हैं, तो हमें एहसास होता है कि हम कहावतों को कानून, वादे या गारंटी के रूप में नहीं सोचते हैं। लेकिन हम वास्तव में एक कहावत का उपयोग ऐसे करते हैं जैसे हम किसी सलाह का उपयोग करते हैं। या शायद ऐसे भी जैसे हम एक परामर्शदाता या सलाहकार का उपयोग करेंगे।

आप जानते हैं, कुछ लोग सोचते हैं कि जब आप डॉक्टर के पास जाते हैं और डॉक्टर कहता है, तीन गोलियाँ खाओ और सुबह मुझे फोन करो, कि हमें वही करना है जो डॉक्टर कहेगा। लेकिन, वास्तव में, एक डॉक्टर क्या है? एक मेडिकल डॉक्टर वह व्यक्ति होता है जिसने चिकित्सा में विशेषज्ञता हासिल की हो। ऐसी कोई कानूनी आवश्यकता नहीं है जो हमें वह करने के लिए बाध्य करे जो डॉक्टर कहता है।

वास्तव में, हम तीन अलग-अलग डॉक्टरों के पास जा सकते हैं, तीन अलग-अलग सलाह ले सकते हैं, और जो हमें सबसे अच्छा लगता है उसे चुन सकते हैं क्योंकि यही तो है। यह सलाह है। और वास्तव में कहावत यही है।

कहावत एक चिकित्सक या एक वकील की तरह होती है, जिससे हम सलाह लेते हैं। वकीलों को कानून का परामर्शदाता कहा जाता है। जिनसे हमें सलाह मिलती है कि फिर हमें निर्णय लेना होता है कि हमें क्या करना है।

और इससे शायद हमें यह समझने में मदद मिलेगी कि हमें द्वंद्वयुद्ध जैसी कहावतें क्यों मिल सकती हैं। इसलिए, हम कहते हैं, उदाहरण के लिए, जो झिझकता है वह खो जाता है, और

छलांग लगाने से पहले देख लें। वो दोनों बातें सच नहीं हो सकतीं, क्योंकि देखने में झिझक होती है।

और यदि आप अपना सारा समय झिझकने या देखने में बिताते हैं, तो आप कभी छलांग नहीं लगा पाएंगे। अतः दोनों कहावतें विरोधाभासी प्रतीत होती हैं। वे विरोधाभासी हैं।

सचमुच में ठीक नहीं। वे वास्तव में पूरक हैं। क्योंकि लौकिक ज्ञान के बिंदु का एक हिस्सा, और नीतिवचन की पुस्तक की लंबाई का कारण, अन्य बातों के अलावा, यह है कि कोई भी कहावत कभी भी पूरी स्थिति, या हर स्थिति के साथ न्याय करने की कोशिश नहीं करती है।

अब, किसी भी व्यक्तिगत कहावत में, जो चीज़ एक कहावत को कार्यशील या कार्यात्मक बनाती है, वह यह है कि इसे सभी प्रकार की स्थितियों पर लागू करने के लिए बढ़ाया जा सकता है। तो, हम अंग्रेजी में कहते हैं, हम कहते हैं, जैसा पिता, वैसा बेटा, जो वास्तव में यिर्मयाह के कथन, जैसी माँ, वैसी बेटी, का टेकऑफ़ है, जैसा कि ईजेकील इज़राइल और यहूदा के बारे में कहता है। लेकिन हम यह भी कह सकते हैं कि जैसा शिक्षक, वैसा विद्यार्थी।

जैसा शिक्षक, वैसा छात्र। और हम वास्तव में इसे सेटिंग्स की एक पूरी श्रृंखला पर लागू कर सकते हैं, जिनका हम वास्तव में उपयोग नहीं करते हैं। मेरा मतलब है, हम उनका उपयोग नहीं करते।

लेकिन हम कह सकते हैं, जैसा पादरी, वैसा चर्च। इसलिए, यदि आप जानना चाहते हैं कि एक पादरी कैसा होता है, तो कभी-कभी उसके चर्च में जाएँ, या कभी-कभी उसके चर्च में जाएँ, जब पादरी वहाँ न हो, और देखें कि लोग कैसे हैं। क्योंकि एक बार जब कोई पादरी लंबे समय तक पद पर रहता है, तो वह मण्डली पादरी की तरह बन जाएगी।

आप वास्तव में पादरी से बात करके मण्डली के पादरी के बारे में अधिक जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। या यदि आप जानना चाहते हैं कि कोई व्यक्ति किस प्रकार का शिक्षक है, तो उनके छात्रों को जानें। खासकर वे छात्र जो एक या दो साल से अपनी कक्षाओं से बाहर हैं और उनसे उन चीज़ों के बारे में बात करें जो वे पढ़ते हैं।

उनसे शिक्षक के बारे में बात न करें। यह उस प्रकार की जानकारी नहीं है जिसकी आपको आवश्यकता है। लेकिन आप शिक्षक के बारे में जानना चाहते हैं।

आप उनसे बात करते हैं, और यह पता लगाना शुरू करते हैं कि यह शिक्षक वास्तव में कैसे सोचता और पढ़ाता है? क्योंकि उसके छात्र, या उसके छात्र, यदि उनके पास पर्याप्त शिक्षक हैं, तो अब शायद एक भी कोर्स ऐसा नहीं करेगा। लेकिन अगर उनके पास वह शिक्षक अक्सर रहे, तो वे उस शिक्षक के सोचने के तरीके को आत्मसात करना शुरू कर देंगे। तो क्या टीचर बाप है? ठीक है, नहीं, लेकिन हम कह सकते हैं कि पिता की तरह, बेटे की तरह, क्योंकि उस रिश्ते को सभी प्रकार का वर्णन करने के लिए बढ़ाया जा सकता है, और वास्तव में, मनुष्यों के बीच सभी प्रकार के रिश्तों की व्याख्या की जा सकती है।

इसलिए, जब हम अपने जीवन में नीतिवचन का उपयोग करते हैं, तो हम पहचानते हैं, आप जानते हैं, यह कहावत एक अवलोकन कर रही है, या यह मुझे कुछ करने के लिए कह रही है, या सुझाव दे रही है कि मैं कुछ करूं, और यह सलाह है, यह सलाह है। तो, जैसा पिता, वैसा बेटा वास्तव में कहता है, अगर मुझे यह याद है, तो मैं यह जानकर बेटे को समझ सकता हूं कि पिता को क्या पसंद है, या इसके विपरीत। या हम पैसे की बातचीत जैसा कुछ कहते हैं, ठीक है, यह एक बहुत अच्छी कहावत है, क्योंकि यह बहुत संकुचित है, और वास्तव में इसमें दो चीजें शामिल हैं जिन्हें मेटामोनी कहा जाता है, जहां एक चीज का मतलब किसी और चीज से होता है।

तो, यह पैसा नहीं है जो बात कर रहा है, बल्कि वह व्यक्ति है जिसके पास पैसा है, और जिस व्यक्ति के पास पैसा है उसे बात करने की ज़रूरत नहीं है, उन्हें बस उपस्थित रहना है। और, आप जानते हैं, यदि आप कभी किसी कमरे में, किसी बैठक में, किसी ऐसे व्यक्ति के साथ रहे हैं जो बहुत अमीर है, और वे समिति का हिस्सा हैं, तो वे जो बातें कहते हैं समिति को उससे कहीं अधिक महत्व देना चाहिए कमरे में कोई और भी हो, सभी चीजें समान हों। खैर, यह उस तरह की सलाह है जो कहावतें हमें देती हैं।

याद रखें सुलैमान ने हृदय को समझने के लिए बुद्धि मांगी थी। पुस्तक के उद्देश्य का एक हिस्सा हमें किसी स्थिति को देखने और समझने की क्षमता देना है कि वास्तव में क्या चल रहा है। अब, कुछ लोगों ने हाल ही में, यहाँ तक कि हाल ही में पुराने नियम की पुस्तकों में भी कहा है कि नीतिवचन 26, 4, और 5, मूर्ख को उसकी मूर्खता के अनुसार उत्तर दें, ऐसा न हो कि वह अपनी दृष्टि में बुद्धिमान हो, मूर्ख को उत्तर न दें उसकी मूर्खता के अनुसार, ऐसा न हो कि तुम उसके समान बन जाओ, द्वंद्वयुद्ध कहावत का मामला है।

खैर, यह संभव है। मैं इसे एक ही कहावत के रूप में सोचना पसंद करता हूं, बस एक लंबी कहावत के रूप में। मेरा मतलब है, बहुत सारी लंबी कहावतें हैं, और याद रखें कि पद्य विभाजन आवश्यक रूप से मौलिक नहीं हैं।

और इसलिए, मुझे लगता है कि हम कह सकते हैं, कि नीतिवचन की पुस्तक में ऐसे छंदों के मामले नहीं हैं जो एक-दूसरे के साथ द्वंद्व करते हों। इसलिए, हमें उनके बीच निर्णय करने की ज़रूरत नहीं है जैसा कि हम अंग्रेजी में करते हैं। इसलिए, अगर हम किसी बैठक में कहते हैं, कोई कहता है, देखो, तुम्हें पता है, यह एक महत्वपूर्ण निर्णय है, हमें छलांग लगाने से पहले देखना होगा।

और कोई दूसरा कहता है, ठीक है, वह अपने नुकसान से झिझकता है। वे हमें दो अलग-अलग प्रकार की सलाह दे रहे हैं। और किसी बिंदु पर, आपको निर्णय लेना होगा।

तो, किसी बिंदु पर, झिझक को रोकना होगा, और छलांग लगानी होगी। आप देखिए, बुद्धिमत्ता यह जानने में आती है कि किस कहावत को किस स्थिति में लागू करना है। यही बुद्धिमत्ता है।

गोएथे ने कहा, वह एक जर्मन कवि थे, उन्होंने कहा, केवल एक भाषा का व्यक्ति कोई भाषा नहीं जानता। हम यह भी कह सकते हैं कि एक मूर्ख केवल एक ही कहावत जानता है। इसलिए,

उदाहरण के लिए, नीतिवचन की किताब में कई छंद हैं जो हमारे पैसे से संबंधित हैं, या जिस तरह से हम पैसे का उपयोग करते हैं।

इसमें कई छंद हैं जो वाणी और हमारे मुंह का उपयोग करने के तरीके से संबंधित हैं। इसमें कई छंद हैं जो साहचर्य और मित्रता या न्याय या विवाह या कई विषयों से संबंधित हैं। इसमें प्रत्येक विषय पर इतने सारे श्लोक क्यों हैं? क्योंकि कोई भी एक कथन समग्र, हर स्थिति के साथ न्याय नहीं कर सकता।

और इसलिए, नीतिवचन की पुस्तक का सही ढंग से उपयोग करने के लिए, हम केवल एक श्लोक को जानकर यह नहीं कह सकते कि, ठीक है, इससे इसका ख्याल रखा जा सकता है। अगर मैं बाल अनुशासन के बारे में इस श्लोक को जानता हूं, तो मुझे वह सब पता है जो मुझे चाहिए, मैं हर स्थिति में इस श्लोक का उपयोग करूंगा। नहीं, आप ऐसा नहीं कर सकते।

क्योंकि नीतिवचन की किताब यही सब नहीं कहती। वास्तव में, बाइबल यही सब नहीं कहती। उदाहरण के लिए, हम अपने बच्चों के पालन-पोषण की आदतों को केवल नीतिवचनों तक ही सीमित नहीं रखना चाहते।

लेकिन हम विशेष रूप से सावधान रहना चाहते हैं कि हम एक कहावत को निरपेक्ष न बना दें और उसे सत्य कथन न बना दें और दूसरा उसका एक प्रकार से सहायक न हो जाए। हम यह सुनिश्चित करना चाहते हैं कि नीतिवचन की पुस्तक नेतृत्व, वैवाहिक विश्वासयोग्यता, या किसी भी अन्य विषय के बारे में जो कुछ भी कहती है, चाहे वह कोई भी अन्य विषय हो, हम उस पर यथासंभव नियंत्रण रखें। इसलिए, जब हम नीतिवचन की पुस्तक पढ़ते हैं और हम एक व्यक्तिगत कहावत का अध्ययन करते हैं और हम अपने आप से कहते हैं, तो यह कहती है, चीजें ऐसी ही हैं।

खैर, हमें यह याद रखना होगा कि यह हमें सलाह दे रहा है। यह हमें सलाह दे रहा है। यह शायद आपमें से कुछ को परेशान कर देगा क्योंकि आप कहेंगे, एक सेकंड रुकें, क्या आप यह नहीं कह रहे हैं कि यह प्रेरित है? और अगर यह प्रेरित है, तो क्या इसका मतलब यह नहीं है कि यह कहता है, अगर मैं ऐसा करूंगा, तो यह होगा ?

क्या यह परमेश्वर का वादा नहीं है? खैर, बहुत से लोग नीतिवचन की किताब इसी तरह पढ़ते हैं। लेकिन वह नीतिवचन की किताब को इस तरह पढ़ना है जैसे कि वह एक अलग तरह का साहित्य हो। और विभिन्न प्रकार के साहित्य के अपने नियम होते हैं कि हम उन्हें कैसे पढ़ते हैं।

तो, यह एक मूर्खतापूर्ण उदाहरण है। यदि आप कोई किताब उठाते हैं, चाहे वह कितनी भी भारी, आधिकारिक और महंगी क्यों न हो, और पहले चार शब्द हैं वन्स अपॉन ए टाइम, तो आप जीवन जीने के लिए सलाह पाने की उम्मीद नहीं करते हैं, है ना? इसके बजाय, आप जानते हैं कि आप एक परी कथा पढ़ने जा रहे हैं और आप इसे एक परी कथा के रूप में पढ़ते हैं। आपको नहीं लगता कि जंगल में कैंडी से बने घर में बच्चों को खाना पकाने के लिए ओवन के साथ वास्तव में कोई चुड़ैल इंतजार कर रही है।

हम यह सोचने का दिखावा भी नहीं करते कि यह वास्तविक है। और कहावतें भी वैसी ही हैं। अर्थात्, पारेमियोलॉजिस्ट ने पता लगाया है कि कहावतें स्पष्ट रूप से हर मानव समाज में मौजूद हैं।

इसमें प्राचीन इज़राइल में बाइबिल की नीतिवचन शामिल हैं, जो बताता है कि भगवान ने हमें एक निश्चित तरीके से बनाया है, कि हम नीतिवचन को समझने और उनका उपयोग करने के लिए प्रवृत्त हैं, और उनमें से कुछ को पवित्रशास्त्र में भी शामिल किया है, नीतिवचन की यह छोटी पुस्तक क्योंकि वह एक है वह हमसे क्या अपेक्षा करता है और वह हम में क्या कर रहा है, इसके कुछ पहलुओं को समझने का बेहतर तरीका। इसलिए, जब हम उन्हें पढ़ते हैं, तो हम उन्हें कानून या वादे नहीं बनाते हैं, क्योंकि अंग्रेजी में नीतिवचन की तरह, वे हमारे सलाहकारों और हमारे सलाहकारों के रूप में कार्य करने के लिए होते हैं। अब मैंने पहले कहा था कि नीतिवचन एक व्यवस्थित पुस्तक है और हमें इसे एक पुस्तक की तरह ही पढ़ना चाहिए।

और मैं केवल अध्याय 1 से 9 तक यह कहते हुए आगे बढ़ रहा हूँ कि यदि आप उन कविताओं को पढ़ने के बारे में अधिक जानकारी में रुचि रखते हैं, तो आप भजन की पुस्तक पर व्याख्यान सुन सकते हैं क्योंकि वही नियम लागू होते हैं। जैसा कि मैंने कहा, हम कल्पना में समानता की तलाश करते हैं और हम देखते हैं कि कविता कैसे संरचित है क्योंकि वे कविताएँ हैं, वे बाइबिल की कविताएँ हैं, और वे रचना के समान नियमों का पालन करते हैं। अब वे हलैलूया और इस तरह की बातें नहीं कहते हैं, लेकिन कविता तो कविता है और कोई भी सीख सकता है, कोई एक तरह की कविता का दूसरी तरह की कविता का अध्ययन कर सकता है, सामग्री में कुछ मामूली अंतर होने पर, लेकिन वास्तव में इससे कोई फर्क नहीं पड़ता।

तो, मैं सीधे अध्याय 10 और उसके बाद की नीतिवचनों को पढ़ने जा रहा हूँ। जब हम उन्हें पढ़ते हैं, तो हमें नीतिवचन नामक पुस्तक को उन उद्देश्यों के प्रकाश में पढ़ने की आवश्यकता होती है जिनके लिए सुलैमान ने लिखा था। और आप जानते हैं, जॉन के सुसमाचार में, जॉन हमें अध्याय 20 के अंत में बताता है कि उसने अपना सुसमाचार क्यों लिखा, ताकि हम विश्वास कर सकें कि यीशु मसीह, परमेश्वर का पुत्र है।

वह हमें बताता है कि उसने अपना पहला पत्र क्यों लिखा, वही बात। यहूदा हमें बताता है कि उसने विश्वास के लिए ईमानदारी से संघर्ष करने के लिए अपना पत्र क्यों लिखा, जो एक बार सभी संतों के लिए दिया गया था। प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में, हमें बताया गया है कि ऐसा क्यों लिखा गया है, जिसे परमेश्वर ने अपने सेवकों पर आने वाली बातों को प्रकट करने के लिए अपने पुत्र को दिया था।

ठीक है, नीतिवचन की शुरुआत में श्लोक 2 से 6 में हमारे पास यही बात है, ताकि हम ज्ञान और समझ को जान सकें, समझ की बातों को समझने की शिक्षा प्राप्त कर सकें, बुद्धिमान व्यवहार और धार्मिकता, न्याय और समानता की शिक्षा प्राप्त कर सकें, भोले-भाले या सरल, अनुभवहीन को विवेक दें, युवाओं को ज्ञान और विवेक दें। तो हमारे पास यह पुस्तक क्यों है, और यह कुछ और छंदों तक चलती है। खैर, ज्यादा विस्तार में न जाकर यहां दो उद्देश्य हैं।

एक तो यह कि नीतिवचन की पुस्तक का एक नैतिक उद्देश्य है। प्राचीन ग्रीस में संभवतः 5वीं शताब्दी ईसा पूर्व में शुरू हुई महान बहसों में से एक बहस बड़े पैमाने पर सोफिस्ट कहे जाने वाले लोगों द्वारा शुरू की गई थी, जिससे हमें परिष्कृत, सोफिस्टरी शब्द मिलता है। दोनों सोफिस्ट ऐसे तर्क विकसित करने के लिए जाने जाते थे जिनका उपयोग किसी भी चीज़ को साबित करने के लिए किया जा सकता था।

यही आरोप उन पर लगाया गया था। वास्तव में द्वितीय वर्ष का शब्द यहीं से आया है, कोई ऐसा व्यक्ति जो इतना मूर्ख है कि यह सोचता है कि वह ऐसे तर्क जानता है जो कुछ भी साबित कर सकते हैं। लेकिन सोफिस्टों ने ये चर्चा इसलिए शुरू की क्योंकि वे जानना चाहते थे कि जीवन जीने का सही तरीका क्या है।

और हम कैसे पता लगाएं कि क्या अच्छा है? और वास्तव में यही वह प्रश्न है जिसने तब सुकरात, प्लेटो और अरस्तू का बहुत अधिक ध्यान आकर्षित किया था, और यहां तक कि हजारों साल बाद एकिनास ने अपनी सुम्मा थियोलॉजिका में भी इसे उठाया था। खैर, सवाल यह है कि अच्छा जीवन क्या है और हम इसे कैसे जानते हैं? खैर, यूनानियों ने जिन चीजों को सामने रखा उनमें से एक, मुझे लगता है, नीतिवचन की पुस्तक में स्पष्ट रूप से दर्शाया गया है, विवेक का विचार है। ग्रीक दर्शन में विवेक, और बाद में एकिनास में, और यहां तक कि बाद में 20वीं शताब्दी में जोसेफ पीपर के लेखन में, जैसा कि पीपर कहते हैं, शांत रहने की क्षमता है ताकि हम वास्तव में समझ सकें कि हम क्या देख रहे हैं।

नीतिवचन हमें जो चीज़ें देना चाहता है उनमें से एक है अंतर्दृष्टि। यदि हम अपना उत्तर देने में इतने व्यस्त हैं तो हमें अंतर्दृष्टि नहीं मिल सकती है, यदि हम जो कहना चाहते हैं उसके बारे में सोचने में, या अपनी आहत भावनाओं के बारे में सोचने में इतने व्यस्त हैं, तो हमें स्थिर हुए बिना किसी स्थिति में वास्तविक अंतर्दृष्टि नहीं मिल सकती है। इसलिए, अलग-अलग अनुवाद इसे अलग-अलग तरीके से करते हैं, लेकिन श्लोक 4 में, भोले-भाले लोगों को विवेक देने के लिए।

विवेक कार्य करने से पहले रुकने, सोचने, समझने की क्षमता है। क्योंकि यूनानियों की समझ में, जो मेरा मानना है कि सुलैमान की भी है, हालांकि वह इसे इस तरह कभी नहीं कहता है, स्थिति यह है कि जो वास्तव में मौजूद है, वह समझ से पहले है। हम समझते हैं, हमें यह समझना होगा कि वहां क्या है, न कि वह जो हम वहां चाहते हैं, न कि वह जो हम सोचते हैं कि वहां है, न कि केवल वह जो हम महसूस करते हैं कि वहां है, हमें यह समझने का प्रयास करना है कि वास्तव में वहां क्या है।

वैसे, यह आजकल बहुत लोकप्रिय धारणा नहीं है, लेकिन इसे समझें, और फिर हमारे कार्य या हमारे शब्द उस समझ पर आधारित होते हैं। इस हद तक कि हम समझने की कोशिश करने में विफल रहेंगे, हमारे कार्य या हमारे शब्द सही या बुद्धिमान नहीं होंगे। तो, सोलोमन का एक लक्ष्य इन नवयुवकों की मदद करना है, जिनके बारे में मैं एक मिनट में और बात करूंगा, इन नवयुवकों को विवेक विकसित करने में मदद करना है।

और पुस्तक में ऐसा करने का एक तरीका यह है कि उन्हें ऐसी चीजें पढ़ने को दी जाएं जिन्हें समझना कठिन हो। आप केवल नीतिवचनों के माध्यम से चर्चा नहीं कर सकते। मेरा मतलब है, आप कर सकते हैं, मुझे लगता है, लेकिन मैथ्यू या यहां तक कि यशायाह के पांच अध्यायों को पढ़ने की तुलना में, नीतिवचन के पांच अध्यायों को पढ़ना और पढ़ना काफी कठिन है।

इसका उद्देश्य चर्चा करना नहीं है। यह विचार करने और विचार करने के लिए है। और इसलिए युवा लोग कैसे ज्ञान प्राप्त करते हैं? उन्हें समझ कैसे आती है? खैर, धीमा करना सीखकर, यह पहचानकर कि जीवन कठिन नहीं होना चाहिए, और वे क्या देख रहे हैं और क्या सुन रहे हैं, इसके बारे में सोचने के लिए समय निकालकर।

और फिर यह उस बात को जन्म देता है जिसे सुलैमान अध्याय तीन में कभी-कभी सीधा जीवन या ईमानदार जीवन कहता है। इसका अनुवाद किया गया है। आप देखिए, नीतिवचन में, मैंने पहले व्याख्यान में कहा था कि नीतिवचन हमें या तो ज्ञान के रास्ते पर या मूर्खता के रास्ते पर जाने की कल्पना करते हैं।

लेकिन यह वास्तव में बिल्कुल सच नहीं है। यदि हम देखें कि नीतिवचन की पुस्तक व्यवस्थाविवरण की पुस्तक की भाषा को दर्शाती है, उदाहरण के लिए, इज़राइल के साथ मूसा की महान वाचा का नवीनीकरण, तो हम पाते हैं कि छवि अधिक है कि एक सड़क या एक रास्ता है और एक तरफ मुड़ना है दायीं या बायीं ओर मुड़ना है। और वास्तव में यही वह चित्र है जिसका उपयोग सुलैमान करता है।

वहाँ एक रास्ता है, और यह केवल वही रास्ता है। किसी भी दिशा में उस रास्ते से हटना खो जाना है, रास्ते से भटक जाना है, मौत की ओर बढ़ना है। यह मूर्खता का परिणाम है।

इसलिए यह नैतिक उद्देश्य हमें किसी भी परिस्थिति में सही या सीधे रास्ते को पहचानने का विवेक देना है ताकि हम जो सीधा है या जो सीधा है उसके अनुसार कार्य कर सकें। अब याद रखें, हम केवल एक ही तरीके से सीख सकते हैं। हम वास्तव में केवल अनुभव से ही चीजें सीख सकते हैं।

मुझे पता है कि अंतर्ज्ञान और सहज ज्ञान युक्त छलांग है, लेकिन अंतर्ज्ञान वास्तव में है, मुझे लगता है, बहुत सारे अनुभव का संचय, और हम सचेत नहीं हैं कि हम इसे तब तक जमा कर रहे हैं जब तक कि अचानक कुछ एकजुट न हो जाए, और हमारे पास इस तरह का एक विचार है के माध्यम से फटने की। लेकिन वास्तव में, हम चीजें सीखते हैं क्योंकि हम उन्हें स्वयं करते हैं। हमारी मां कहती है, चूल्हे को मत छूना, जल जाओगे।

जब हम केवल दो साल के थे तो हमें नहीं पता था कि जला शब्द का क्या मतलब है, इसलिए जब हम चूल्हे को छूते हैं तो हम खुद को जला लेते हैं। अब मुझे पता है कि खुद को जलाने का क्या मतलब होता है, और मुझे पता है कि मुझे चूल्हे को क्यों नहीं छूना चाहिए। या हम सीखते हैं क्योंकि कोई और हमें बताता है।

तो, हमारी माँ कह सकती थी, चूल्हे को मत छुओ, तुम जल जाओगे, और हम चूल्हे को नहीं छूते। अब हमने क्या सीखा? हमें पता ही नहीं चला कि चूल्हा गर्म है। हम यह भी नहीं जानते कि हमें ऐसा क्यों नहीं करना चाहिए।

हम वास्तव में नहीं जानते कि हमें चूल्हे को क्यों नहीं छूना चाहिए, लेकिन हमने आज्ञाकारिता सीख ली है। दीर्घकाल में दोनों का परिणाम एक ही हो सकता है। हम अब खुद को नहीं जलाएंगे।

कई चीज़ें किसी और से सीखने की तुलना में व्यक्तिगत अनुभव से सीखना कहीं अधिक कष्टदायक है। सुलैमान जो कर रहा है वह हमें प्राचीन निकट पूर्व के बुद्धिमान पुरुषों के संचित अनुभव से सीखने का अवसर दे रहा है और उनकी बातें कह रहा है, ये बातें विचार करने और सोचने लायक हैं। इसलिए, इसे करने के लिए समय निकालें।

तो, हमारा यह नैतिक उद्देश्य है। और इसके पीछे श्लोक पाँच के अंत में यह शब्द है। वह कहते हैं कि एक बुद्धिमान व्यक्ति सीखने में वृद्धि सुनेगा।

समझदार मनुष्य बुद्धिमानी से युक्ति बढ़ाएगा। अब वहां परामर्श शब्द बड़ा दिलचस्प है। यह परामर्शदाताओं या सलाहकारों के लिए इस्तेमाल किया जाने वाला सामान्य शब्द नहीं है।

इसलिए, उदाहरण के लिए, जब एक राजा के पास एक सलाहकार होता है। इसका उपयोग अय्यूब में केवल एक बार और नीतिवचन की पुस्तक में लगभग पाँच या छह बार किया गया है। इसका प्रयोग अधिकतर तब किया जाता है जब कोई राजा युद्ध के लिए जा रहा हो।

इसकी लगभग आधी घटनाओं में एक राजा के युद्ध में जाने का उल्लेख है। यह कहता है, तुम युद्ध कैसे करते हो? आप बहुत सारी सलाह लेकर लड़ाई लड़ते हैं। आपको सलाह कहाँ से मिलती है? आप इसे परामर्शदाताओं से प्राप्त करें।

जो व्यक्ति नीतिवचन की पुस्तक का अध्ययन करता है, जो उसका अध्ययन करता है, उसका अध्ययन करने से उसे मानो मौखिक परामर्शदाताओं का एक समूह मिल जाता है। कहावतें स्वयं आपकी सलाह का एक वृत्त या हिस्सा बन जाएंगी। वे आपकी सलाह का हिस्सा बन जाएंगे और जिस पर आप निर्णय ले सकते हैं।

और वे नैतिक मार्गदर्शक बन जायेंगे। अब यह एक बड़ा उद्देश्य है। और शायद यही वह उद्देश्य है जिससे हम सभी जुड़े हैं।

आप नीतिवचन की पुस्तक क्यों पढ़ते हैं? एक बेहतर इंसान बनना। ठीक है, ठीक है, वास्तव में एक ईमानदार व्यक्ति बनना है। और एक ईमानदार व्यक्ति होने का मतलब है, जैसा कि मैंने पिछले व्याख्यान में कहा था, ईश्वर ने जिस तरह से दुनिया बनाई है, उसके अनुरूप जीना।

क्योंकि वह स्वयं परमेश्वर के स्वभाव के अनुरूप जीना है। लेकिन यहाँ एक दूसरा उद्देश्य भी है। यदि हम श्लोक 5 और 6 को देखें तो हमें यह मिलता है।

बुद्धिमान व्यक्ति विद्या में वृद्धि सुनेगा। एक समझदार व्यक्ति एक कहावत और एक आकृति को समझने के लिए बुद्धिमान सलाह प्राप्त करेगा। वहाँ वह शब्द है मेलिट्सा, एक अंधेरी कहावत।

बुद्धिमानों के वचन और उनकी पहेलियाँ। यह कुछ बातें सुझाता है। सबसे पहले, केवल भोले-भाले लोगों को ही सीखने की ज़रूरत नहीं है।

और जैसा कि हमने पहले कहा, आप स्थिर नहीं रह सकते। आप हमेशा या तो मूर्खता या बुद्धिमत्ता की ओर काम कर रहे हैं। तो, आप बस यह नहीं कह सकते, ठीक है, मैं अब बुद्धिमान हूँ।

मैं सीखना बंद कर सकता हूँ. वह काम नहीं करता. सुलैमान कहता है नहीं.

आपको सीखते रहना होगा. वास्तव में, बाद में पुस्तक में, नीतिवचनों में से एक में विशेष रूप से कहा गया है, अनुशासन सुनना बंद करना, मेरे बेटे, ज्ञान के शब्दों से भटकना है। जैसे ही हम सीखना बंद कर देते हैं, जैसे ही हम बढ़ना बंद कर देते हैं, जैसे ही हम ज्ञान की खोज करना बंद कर देते हैं, हम मूर्खता की ओर बढ़ने लगते हैं।

और कुछ लोग वास्तव में यूँ ही नहीं बहते। कुछ लोग ज्ञान की खोज करना बंद कर देते हैं और उसके लिए सिर झुकाकर दौड़ते हैं। इसे पहचानना आसान है.

लेकिन इसका एक नैतिक उद्देश्य है, न केवल भोले-भाले लोगों के लिए, बल्कि उनके लिए जो पहले से ही परिपक्व हैं, उनके लिए जो अनुभवी हैं, उनके लिए जिन्हें बुद्धिमान माना जा सकता है या हो सकता है, हालाँकि यहाँ खतरा यह है कि आप शायद मूर्ख हो सकते हैं, अपने आप को बुद्धिमान समझते हैं. यहां तक कि बुद्धिमान भी अधिक बुद्धिमान बन सकते हैं और बनना भी चाहिए। लेकिन यह वास्तव में है, छंद पाँच और छह में, वह सुझाव देता है कि यहाँ केवल एक नैतिक उद्देश्य नहीं है, बल्कि यहाँ एक मानसिक उद्देश्य है।

और वह यह है कि हम समझने की क्षमता हासिल कर लेते हैं। नीतिवचनों के अध्ययन में कुछ ऐसा है जो हमें होशियार बनाता है और नीतिवचनों को बेहतर ढंग से समझने में सक्षम बनाता है, यहां तक कि जिनका हमने अभी तक अध्ययन नहीं किया है। नीतिवचन का अध्ययन करने में कुछ ऐसा है जो हमें अंतर्दृष्टि प्रदान करता है, अध्ययन करने से हमारी समझने की क्षमता बढ़ सकती है।

हम अपनी बौद्धिक क्षमता में वृद्धि करते हैं। मेरा मतलब है, वह कहते हैं कि बुद्धिमान और समझ हासिल करेंगे, बढ़ेंगे, नीतिवचन और पहेलियों को बेहतर ढंग से समझने में सक्षम होंगे। हम शायद इसके बारे में ज्यादा नहीं सोचते क्योंकि वास्तव में ऐसा नहीं है, आप जानते हैं, नीतिवचन इसके लिए नहीं हैं, वे सलाह देते हैं।

लेकिन एक मायने में, अगर हम खुद को बुद्धिमान चीजों का अध्ययन करने के लिए समर्पित कर देते हैं, जैसा कि सोलोमन ने बाद में कहा, बुद्धिमानों के होठों पर ज्ञान पाया जाता है, है ना? ठीक है, अगर हम खुद को बुद्धिमान चीजों का अध्ययन करने के लिए समर्पित कर दें, तो चूँकि

अंतर्दृष्टि और समझ, ज्ञान के साथ-साथ समानांतर पहलू हैं, तो हम स्वयं अधिक बुद्धिमान बन जाएंगे। और, आप जानते हैं, मुझे यह पहले ही कहना चाहिए था। ये तो बस एक पहलू है।

लेकिन जिन चीजों का हम उपयोग करते हैं उनमें से एक है बुद्धिमान शब्द, बुद्धिमान शब्द और बुद्धिमत्ता। लेकिन बाइबल में जिन शब्दों का इस तरह अनुवाद किया गया है, वे वास्तव में कौशल को संदर्भित करते हैं। यदि आप वापस जाएं, तो मेरा मतलब है, जब मैं वास्तव में कहता हूँ, तो उनका समान रूप से उसी तरह अनुवाद किया जा सकता है।

यदि आप निर्गमन की पुस्तक में वापस जाते हैं और अहोलीआब और बसलेल की कहानियाँ पढ़ते हैं, तो वे कारीगर जिनके बारे में प्रभु ने कहा था कि उन्होंने लकड़ी, पत्थर, धातु और कपड़े के साथ काम करने में विशेष ज्ञान या कौशल दिया है, या तम्बू में पत्थर नहीं, लकड़ी और धातु और कपड़ा, यह एक ही शब्द है। चोकमा, बुद्धि, वास्तव में जीवन जीने का एक प्रकार का कौशल या विशेष रूप से कुछ भी करने का कौशल है। नीतिवचन की पुस्तक में, यह समझने में एक कौशल प्रतीत होता है।

यह समझ नीतिवचनों की समझ के साथ-साथ जीवन को समझने और हमारे सामने आने वाली परिस्थितियों को समझने की क्षमता दोनों है। और इसीलिए कई कहावतें हैं, मेरा मानना है, मेरा मानना है कि इसीलिए कई कहावतें अचेतन या गुप्त रूप से शायद, कहने का एक बेहतर तरीका है, हमें कुछ भी करने से पहले स्थिति पर ध्यान देने की सलाह देती हैं। ऐसा नहीं है कि केवल राजा को ही बाहर जाकर परामर्शदाता लाना चाहिए।

इसलिए, उदाहरण के लिए, एक कहावत जो कहती है, सोने के सेब और चांदी की सेटिंग, सुनने वाले कान के लिए एक बुद्धिमान फटकार है, अध्याय 25। महत्वपूर्ण कविता, उस कविता में महत्वपूर्ण शब्द बुद्धिमान या कुशल नहीं है, यह है कि कान के पास है सुनने के लिए। तो, मेरे पास देने के लिए बहुत अच्छी सलाह हो सकती है, वास्तव में, मैं यह भी जान सकता हूँ कि आप जिस परिस्थिति का सामना कर रहे हैं, उसके लिए आपको क्या कहना है।

लेकिन अगर आप सुन नहीं रहे हैं, अगर आप इसे सुनने के लिए तैयार नहीं हैं, तो इससे कुछ हासिल नहीं होता। बेहतर होगा कि मैं ऐसा न कहूँ क्योंकि वह कहते हैं, यह तब होता है जब आपके पास बुद्धिमान शब्द और सुनने वाला कान होता है, तभी सोने के सेब, जो शायद आभूषण का एक टुकड़ा या ऐसा कुछ होता है, चांदी में होते हैं सेटिंग। अब एक और चीज़ है, वास्तव में बहुत सी अन्य चीज़ें हैं, लेकिन इसमें एक और चीज़ है जो मुझे लगता है कि मुझे श्लोक 2 से 6 के बारे में कहने की ज़रूरत है। यहाँ एक नैतिक उद्देश्य है, एक मानसिक उद्देश्य है।

मुझे लगता है कि हमें बहुत सावधान रहने की ज़रूरत है कि हम नीतिवचनों का उपयोग उस तरह न करें जिसे मैं बाइबिल की गोलियाँ कहता हूँ। तुम्हें पता है, सोलोमन कहता है, ऐसा मत करो, धमाका करो, तुम दोषी हो। सुलैमान कहता है, ऐसा करो, धमाका करो, बेहतर होगा कि तुम इसे करो।

और इसलिए, फिर नीतिवचन बस एक और कानून बन जाते हैं, लैविकस या निर्गमन या व्यवस्थाविवरण में नियमों और विनियमों का एक और उपसमूह। मुझे लगता है, वास्तव में, मुझे लगता है कि उन सभी कानूनों को समझने का एक बेहतर तरीका भी है, और मुझे लगता है कि आप बस एक मिनट में मेरी बात समझ जाएंगे। यदि हम सोचें कि ईश्वर हमें पवित्रशास्त्र देकर क्या कर रहा है, तो हम पाते हैं कि पवित्रशास्त्र का उद्देश्य ईश्वर स्वयं को प्रकट करना है।

अब हम कह सकते हैं कि, मैं अपने पैसे का उपयोग कैसे करता हूँ, यह कहावत मुझे ईश्वर के बारे में कैसे कुछ बताती है? या वह कहावत जो मुझे पत्नी चुनने के बारे में बताती है, वह मुझे प्रभु के बारे में कैसे कुछ बताती है? खैर, यह एक नीतिवचन का अध्ययन करने और उसके बारे में सोचने के अर्थ का एक हिस्सा है। लेकिन यह तब भी है, जब हमारे पास नीतिवचन हैं, शायद विशेष रूप से तब जब हमारे पास नीतिवचन हैं जो हमें आदेश देते हैं, बुद्धिमान बनें, तब शायद हमें यह समझने की आवश्यकता है कि प्रभु हमें वही दिखा रहे हैं जो वह चाहते हैं कि हम बनें, इसलिए नहीं कि वह एक धमकाने वाला है, बल्कि इसलिए कि वह जानता है कि हम सबसे ज्यादा खुश उसी तरह होंगे, जो हमारे लिए सबसे अच्छा होगा। जो, वैसे, उस प्रारंभिक यूनानी चर्चा पर वापस जाता है।

हम कैसे खुश रह सकते हैं? अच्छा महसूस करने के अर्थ में नहीं, बल्कि अच्छा जीवन जीने के अर्थ में। तो, सुलैमान कह रहा है, या नीतिवचन की पुस्तक के माध्यम से, प्रभु स्वयं कह रहा है, जो लोग वैसा बन रहे हैं जैसा मैं चाहता हूँ कि वे ऐसे दिखें। अब आप देखिए, हम, फिर से, उस पर प्रतिक्रिया कर सकते हैं और कह सकते हैं, हे भगवान, मैं माप नहीं सकता, मैं दोषी हूँ।

ज़रूर, यह सच है। हर कोई ऐसा ही है। लेकिन हम यह भी कह सकते हैं कि क्या ईश्वर, और मैं विशेष रूप से उन लोगों से बात कर रहा हूँ जो अब ईसाई हैं यदि ईश्वर ने उस कार्य को पूरा करने का वादा किया है जो उसने शुरू किया है, यानी, वह कहता है, मैंने आपको लाकर आप में एक कार्य शुरू किया है क्राइस्ट, और मैं वह काम तब तक करता रहूंगा जब तक मेरा काम पूरा न हो जाए।

फिर नीतिवचन हमें कार्य का एक भाग, उस कार्य के कुछ पहलू दिखाते हैं जो ईश्वर हममें कर रहा है। कि हम ईमानदार हैं, कि हम वफादार हैं, कि हम अच्छे दोस्त हैं, कि हम ऐसे तरीकों से बात करते हैं जो मददगार हों, जो जीवन और प्रोत्साहन लाते हैं, और बहुत सी अन्य चीजें। लेकिन आप देखिए, बात यह है कि, हमारी निंदा करने से कहीं दूर, हालांकि वे हमेशा ऐसा करते हैं, लेकिन हमारी निंदा करने से कहीं ज्यादा, शायद यह कहने का एक बेहतर तरीका है, भगवान हमें वह काम दिखा रहे हैं जो वह पहले से ही हम में कर रहे हैं।

ताकि नीतिवचन वास्तव में हमारे लिए यह कहने का आधार बन जाएं, हे भगवान, मैं इसमें असफल हो रहा हूँ। क्षमा चाहता हूँ। वह पश्चाताप का भाग है।

यही वह हिस्सा है जहां हमें अपराधबोध महसूस होता है। लेकिन, आपने मुझे ऐसा करने का आदेश देकर वादा किया है, आप मुझे वह दिखा रहे हैं जो आप वास्तव में पहले से ही करना चाहते हैं और पूरा होते देखना चाहते हैं। तो, फिर नीतिवचन की आवश्यकताएं, चाहे वे

सकारात्मक हों या नकारात्मक, निषेध या आदेश, आवश्यकताएं ऐसी चीजें बन जाती हैं जो आधार बन जाती हैं जिन पर हम प्रार्थना कर सकते हैं।

हम कह सकते हैं, हे भगवान, मैं जानता हूं कि मेरे शब्द उतने दयालु नहीं हैं जितने हो सकते हैं। उस अंत तक मुझमें काम करो। और तब मैं प्रभु को धन्यवाद दे सकता हूं, कि उसने वादा किया है कि उसे जो भी आवश्यकता होगी, वह पूरा करेगा।

तो, वे गोलियां नहीं हैं। वे वास्तव में हमारी प्रार्थनाओं के लिए नींव या शायद निर्माण खंड बन जाते हैं। अब, मुझे लगता है कि यद्यपि हम इस नैतिक उद्देश्य और इस मानसिक उद्देश्य के बारे में बात करते हैं, मुझे लगता है कि नीतिवचन की पुस्तक का एक और बड़ा उद्देश्य है।

सुलैमान राजा था। सुलैमान इस्राएल का राजा था, जो वास्तव में कोई बड़ा देश नहीं था। यह ठीक-ठाक आकार था, लेकिन वास्तव में बड़ा नहीं था।

अपने समय में, उसके पास दक्षिण, उत्तर और उत्तर-पूर्व दोनों तरफ एक विशाल, ढहता हुआ साम्राज्य था। लेकिन सुलैमान को एक समस्या थी। समस्या यह थी कि उसके राज्य की निरंतरता कैसे सुनिश्चित की जाये।

और इससे उनकी परेशानी और बढ़ गई है। वह जानता है कि अपने राज्य की निरंतरता सुनिश्चित करने के लिए उसे क्या करना है। इज़राइल का राज्य तब तक कायम रहेगा जब तक इज़राइल वाचा की शर्तों को पूरा करता है।

लैव्यव्यवस्था 26 और व्यवस्थाविवरण 28 में यह परमेश्वर का वादा है। इसलिए, नीतिवचन की पुस्तक उस चीज़ को संबोधित है जिसे हम कह सकते हैं, जिसे मैंने बड़े होने के बारे में सोचा था, क्योंकि पास में ही इस तरह का एक स्कूल था, एक तैयारी स्कूल। यह प्रीप स्कूल के लोगों को संबोधित है।

जो लोग आइवी लीग कॉलेजों और विश्वविद्यालयों में जाने वाले हैं। जो लोग नेता बनने जा रहे हैं। वे न्यायाधीश और सैन्य शासक और गवर्नर बनने जा रहे हैं, और शायद उनमें से कुछ, उनमें से एक, राजा बन जाएगा।

वे राजा के सलाहकार और परामर्शदाता बनेंगे। यदि आप पुस्तक पढ़ते हैं, तो यह तुरंत स्पष्ट हो जाती है कि क्यों इतनी सारी कहावतें, विशेष रूप से बाद के कुछ अध्यायों में, एक राजा के सामने आप कैसे व्यवहार करते हैं, उससे संबंधित हैं। क्या आपको लगता है कि बेथलहम में रहने वाले किसानों को राजा के साथ बैठकर भोजन करने की सुविधा उपलब्ध थी? नहीं।

इसीलिए छंदों का संबंध है, ऐसे छंद हैं जो विशेष रूप से राजा के खिलाफ विद्रोह करने की चेतावनी देते हैं। राजा के विरुद्ध विद्रोह कौन करेगा? जाबेश गिलियड में किसान बाहर? नहीं, विद्रोह करने वाले किसान नहीं होंगे।

यह शासक बनने जा रहे हैं। यह अबशालोम के समान राजा का पुत्र होगा। इतने सारे श्लोक धन के बारे में क्यों बात करते हैं और हम इसका उपयोग कैसे करते हैं? वे अन्यायपूर्ण लाभ के विरुद्ध चेतावनी क्यों देते हैं? याद रखें, हम यहां एक ऐसी दुनिया के बारे में बात कर रहे हैं जो कृषि प्रधान है और जिसे, जब मैं बड़ा हो रहा था, हम खरोंच खेती कहते थे।

आप काफी कुछ सीखते हैं, आप अपनी खेती से जीवित रहने के लिए पर्याप्त कमाई करते हैं और बस इतना ही। इस अर्थ में यह काफी सरल दुनिया है। और इसलिए नीतिवचन की पुस्तक बड़े पैमाने पर जनता को संबोधित नहीं है।

यह उन लोगों को संबोधित है जो राष्ट्र में नेतृत्व के पदों पर कदम रखने जा रहे हैं क्योंकि बाइबिल, जैसा कि बाइबिल बार-बार स्पष्ट रूप से दिखाती है, जैसे नेता जाते हैं, वैसे ही देश भी जाता है। इसीलिए यदि आप भविष्यवक्ताओं को पढ़ते हैं, तो हमेशा राजाओं और भविष्यवक्ताओं और पुजारियों और बुद्धिमानों की निंदा की जाती है क्योंकि वे राष्ट्र को गुमराह करते हैं। ईजेकील 22 पढ़ें।

इसीलिए वह उस सूची को नीचे चलाता है। वे ही दोषी हैं और देश के भी दोषी हैं क्योंकि वे दोषी हैं। और इसीलिए राजाओं की पुस्तक लगातार कहती है कि यह राजा दुष्ट था या यह राजा अच्छा था क्योंकि राष्ट्र का भाग्य राजा के व्यवहार, जीवन और विकल्पों पर निर्भर करता है।

ये लोग शासक बनने जा रहे हैं, यही कारण है कि इतने सारे श्लोक न्याय के बारे में बात करते हैं। क्या आपको लगता है कि इज़राइल में इतने सारे मुकदमे थे? नहीं, दुनिया के 70% वकील संयुक्त राज्य अमेरिका में रहते हैं। वास्तव में, नीतिवचन के कई छंदों में, कई छंदों में, निर्दोष और धर्मी शब्दों का बेहतर अनुवाद किया जाता है, मैं धर्मी का अनुवाद किया जाता हूं और दुष्ट का अनुवाद निर्दोष और दोषी के रूप में बेहतर किया जाता है।

इसलिए, 18:5 कहता है कि दोषी के प्रति पक्षपात करना अच्छा नहीं है, न ही निर्दोष को न्याय से अलग करना अच्छा है। क्यों? क्योंकि जिन लोगों के लिए यह पुस्तक लिखी गई है वे ही निर्णायक बनने जा रहे हैं। इसलिए, जो सही है उसे स्थापित करने के लिए वे जिम्मेदार होंगे।

वे मानक स्थापित करने जा रहे हैं और मानक देश का भाग्य निर्धारित करने जा रहे हैं। तो, आप देख सकते हैं कि पुस्तक का उद्देश्य केवल व्यक्तिगत नहीं है, यह सांप्रदायिक या संविदात्मक या साम्यवादी है, अगर मैं उस शब्द का उपयोग कर सकता हूँ। नीतिवचन की पुस्तक इन नवयुवकों के लिए बहुत सोच-समझकर बनाई और लिखी गई है ताकि उनकी आज्ञाकारिता उनके अपने जीवन में वाचा की आवश्यकताओं को पूरा कर सके।

हां, अपने स्वयं के जीवन में, लेकिन अपने देशवासियों के जीवन में अपने उदाहरण से भी और इज़राइल को एक राष्ट्र के रूप में भूमि पर बने रहने में सक्षम बनाया। पुनः, लैव्यव्यवस्था 26, व्यवस्थाविवरण 28, वाचा के श्राव्यों से बचकर और उसका आशीर्वाद प्राप्त करके। एक आखिरी बात और मेरा समय लगभग खत्म हो चुका है।

क्योंकि यह बाइबल में है, अर्थात् यह विहित है, यह अब युवा पुरुषों तक ही सीमित नहीं है। मुझे नहीं लगता कि मुझे इस पर और कुछ कहने की जरूरत है। लेकिन इसीलिए यह इतनी मर्दाना किताब है क्योंकि यह इन पुरुषों को संबोधित है।

लेकिन देवियों, युवा और वृद्ध, यह हम सभी के लिए है। तो अगली बार हम देखेंगे कि हम एक व्यक्तिगत कहावत के साथ क्या करते हैं, और जब हम इसे पढ़ते हैं तो हम क्या देखते हैं।